हुनरमंद युवा पढ़ाई के साथ-साथ कर सकते हैं नौकरी

वोकेशनल कोर्सेज में अध्ययन के दौरान छात्र किसी भी इंडस्ट्री में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं या खुद का स्व-रोजगार एवं स्टार्टअप भी शुरू कर सकते हैं...

प्रो. संदीप कुमार तोमर

रजिस्ट्रार भारतीय स्किल डेवलपमेंट

आज हमें पारंपरिक डिग्री कोर्सेज की जगह व्यावसायिक डिग्री की जरूरत है। स्किल एजुकेशन का मूल उद्देश्य ही विद्यार्थियों को उद्योगों की जरुरत के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा या किसी व्यवसायों में पूर्ण प्रशिक्षण देना है। यह कहना है प्रसिद्ध वैज्ञानिक, प्रवासी भारतीय डॉ. राजेंद्र कुमार जोशी द्वारा स्थापित भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार प्रो. संदीप कुमार तोमर का...

अपने विश्वविद्यालय के बारे में बताएं?

भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी की स्थापना राजेंद्र एवं उर्सुला जोशी चैरिटेबल ट्रस्ट के एक विशेष विजन और मिशन के तहत हुई है। इसके संस्थापक प्रसिद्ध वैज्ञानिक दिवंगत डॉ. राजेंद्र जोशी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. उर्सुला जोशी हैं, जो भारत को कौशल शिक्षा में विकसित देशों के स्तर पर ले जाना चाहते हैं। विकसित देशों में कम से कम बेरोजगारी का कारण है, वहां अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को किसी-न-किसी व्यवसाय में हुनरमंद कर दिया जाता है और वे स्नातक के दौरान ही किसी भी इंडस्ट्री में रोजगार पा लेते हैं या फिर अपना स्वयं का रोजगार स्थापित कर लेते हैं। भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी में भी हम युवाओं को बीवॉक और एमवॉक कोर्सेज के साथ-साथ उद्योगों की आवश्यकता के अनुसार प्रशिक्षित करते हैं।

विश्वविद्यालय में कौन-कौन से कोर्सेज हैं?

हमारा विश्वविद्यालय केवल स्किल एजुकेशन को समर्पित है, यहां मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्सिट के साथ बैचलर ऑफ वोकेशन (बीवॉक) और मास्टर ऑफ वोकेशन (एमवॉक) कोर्सेज अलग-अलग स्किल्स जैसे इलेक्ट्रिकल, रेफ्रिजरेशन, मैन्यूफैक्चरिंग, रिन्युएबल एनर्जी, कंप्यूटर व आईटी नेटवर्किंग, हॉस्पिटैलिटी एवं टूरिज्म, ऑटोमोटिव, हेल्थ केयर आदि में उपलब्ध हैं। विद्यार्थी छह महीने में सर्टिफिकेट, एक साल में डिप्लोमा, दो साल में एडवांस्ड डिप्लोमा और तीन साल में बैचलर ऑफ वोकेशन डिग्री पूरी कर लेते हैं। मास्टर ऑफ वोकेशन में भी प्रथम वर्ष में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा एवं दूसरे वर्ष में एमवॉक पूरी की जा सकती है।

आप स्किल डेवलपमेंट एजुकेशन को किस तरह से देखते हैं?

यदि युवाओं को हम कौशल शिक्षा से हुनरमंद करके और राष्ट्र निर्माण में युवा-शक्ति की भागीदारी बढ़ाने और रोजगार देने में कामयाब हो जाते हैं, तो भारत नई ऊंचाइयों को छू सकता है। आज हमें पारंपरिक डिग्री कोर्सेज की जगह व्यावसायिक डिग्री की जरूरत है। स्किल एजुकेशन का मूल उद्देश्य ही विद्यार्थियों को उद्योगों की जरूरत के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा या किसी व्यवसाय में पूर्ण प्रशिक्षण देना और पूर्णतः प्रशिक्षित मानव संसाधन उपलब्ध करवाना है।

अपने विश्वविद्यालय के शैक्षिक परिदृश्य और उपलब्ध इंफ्रास्ट्रक्चर के बारे में बताइए?

हमारे विश्वविद्यालय में क्रेडिट सिस्टम के अनुसार तीन वर्ष के ग्रेजुएशन कोर्स को एन एस डी सी व नेशनल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क के अनुसार क्रेडिट्स को क्रेडिट्स के सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम सेमेस्टर के क्रेडिट्स विद्यार्थी विश्वविद्यालय में उपलब्ध मॉड्यूल के अनुसार प्रैक्टिकल आधुनिक मशीनों पर पूर्ण करते है और वहीं द्वितीय सेमेस्टर इंडस्ट्री में इंटर्नशिप करके पूर्ण करते हैं, इसी प्रकार बाकी क्रेडिट्स कंप्लीट होते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्टूडेंट्स छह महीने या एक साल बाद कभी भी कोर्स को बीच में छोड़ कर रोजगार के लिए जा सकते हैं और फिर वापिस अपनी डिग्री पूर्ण करने के लिए आ सकते हैं।

आप युवाओं और अभिभावकों को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

इक्कीसवीं सदी की आवश्यकतानुसार हमें आज विद्यार्थियों में परीक्षा उत्तीर्ण करने के बजाय योग्यता विकसित करने की जरूरत है। विद्यार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों को भी यह सोचने की आवश्यकता है कि वे आज वोकेशनल कोर्सेज के बारे में भी सोचें जिनकी आज इंडस्ट्रीज में अत्यधिक मांग है। वर्तमान में अलग-अलग स्किल्स में बीवॉक और एमवॉक डिग्री कोर्सेज उपलब्ध हैं। साथ ही मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर के लगभग सभी निकायों में अवसर बढ़ते जा रहे हैं। टेक्नोलॉजी और डिजिटलाइजेशन के सहयोग से सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, हेल्थ केयर, फार्मास्युटिकल, फूड प्रोसेसिंग, वुड वर्क, सोलर ऊर्जा आदि में निर्मित नए-नए अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। इसके साथ आज शिक्षकों को बीवॉक जैसी व्यावसायिक डिग्री की एक नई श्रेणी बनाने के अलावा सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उपलब्ध कोर्सेज में अनिवार्य रूप से एक कौशल संबंधित यूनिट जोड़ना अति आवश्यक है।